भाकृ अनुप
ICAR

मात्स्यिकी - विकास की सेवा में प्रौद्योगिकी

केन्द्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

मत्स्यपुरी पी.ओ., कोचिन- 682 029

पार्श्विका

इतिहास

केन्द्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना वर्ष 1957 में भारत सरकार के खाद्य एवं कृषि मंत्रालय द्वारा गठित उच्चस्तरीय समिति की संस्तुतियों के आधार पर हुई थी। मत्स्यन यान एवं गिअर में अनुसंधान कार्य के लिए एक लघु केन्द्रक कर्मचारी सदस्यों के साथ उस समय के खाद्य एवं कृषि मंत्रालय के कृषि विभाग के अधीन 1957 में कोचिन में कार्य प्रारंभ किया था। संस्थान के संसाधन डिवीज़न 1958 में और विस्तार सूचना व साख्यिकी डिवीज़न 1961 में प्रारंभ किया गया था। 1 अक्तूबर, 1967 से कार्य में ज्यादा स्वायत्तता उपलब्ध करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन संस्थान को लाया गया था।

यह संस्थान मत्स्य के पैदावर एवं पश्च पैदावर से संबंधित सभी विद्या विषयों में अनुसंधान करने वाला देश का एक राष्ट्रीय केन्द्र है। क्षेत्रीय आवश्यकताओं प्रदान करने और स्थान विशेष की समस्याओं का समाधान करने वेरावल (गुजरात), विशाखपट्टणम (आंध्रा प्रदेश), बुरला (उडीसा), होशंगाबाद (मध्य प्रदेश), मुंबई (महाराष्ट्र) और कलिकट (केरल) में अनुसंधान केन्द्र कार्यरत है।

के मा प्रौ सं का अधिदेश

1. मत्स्य के पैदावर के लिए नूतन प्रक्रिया, लागत, प्रभावी प्रौद्योगिकियों का विकास।
2. पश्च पैदावर प्रौद्योगिकीयों के विभिन्न पहलूओं का विकास और मानकीकरण।
3. जलीय जीवों से जैव चिकित्सा औषध और उद्योग की उत्पादों के निष्कर्षण के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास।
4. क्रमबद्ध आँकडों पर आधारित प्रग्रहण और पश्च प्रग्रहण प्रौद्योगिकियों के साथ सूचना का भण्डार के रूप में कार्य करना ।

5. प्रशिक्षण, शिक्षा और विस्तार शिक्षा कार्यक्रमों के द्वारा प्रौद्योगिकी के स्थानांतरण का संचालन।

6. परामर्श सेवा और मत्स्यन उद्योग के पूर्ण विकास के लिए नवाचारों को लोकप्रिय बनाना।

संगठन और संरचना

निदेशक संस्थान का प्रधान है। संस्थान के अनुसंधान एवं प्रबंधन से संबंधित सभी प्रशासनिक एवं वित्तीय अधिकार उन्हीं के पास सुरक्षित है। उन्हें संस्थान के अनुसंधान एवं विकास कार्यकलापों के कार्यान्वयन में विभिन्न वैज्ञानिक डिवीज़नों के प्रधानों से सहायता मिलती है। उन्हें सामान्य प्रशासन से संबंधित मामलों के निपटान के लिए वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और वित्तीय लेखा के पहलुओं और आन्तरिक लेखा परीक्षा की देखभाल करने के लिए सहायक वित्त एवं लेखा अधिकारी से भी सहायता मिलती है। तकनीकी अनुभाग, मुख्यालय कोचिन और अनुसंधान केन्द्रों में संस्थान द्वारा संचालित अनुसंधान परियोजना संबंधित मामलों को देखता है। संस्थान में राजभाषा नीति के मॉनिटरिंग का काम राजभाषा अनुभाग करता है और संस्थान की आवश्यकता के अनुरूप रिपोर्ट और अन्य प्रकाशनों को हिन्दी में लाने का कार्य करता है।

निम्नांकित वैज्ञानिक डिवीज़नों में संस्थान का अनुसंधान कार्य संपन्न होता है:

1. मत्स्यन प्रौद्योगिकी डिवीज़न
2. मत्स्य संसाधन डिवीज़न
3. गुणता आश्वासन एवं प्रबंधन डिवीज़न
4. जैवरसायन एवं पोषण डिवीज़न
5. सूक्ष्मजीवविज्ञान, किण्वन एवं जैव प्रौद्योगिकी डिवीज़न
6. अभियांत्रिकी डिवीज़न
7. विस्तार, सूचना और सांख्यिकी डिवीज़न

इस समय संस्थान के वैज्ञानिक मानवशक्ति की संख्या 80 है।

आधारिक संरचना

भवन

कोचिन स्थित मुख्यालय और वेरावल, मुंबई और विशाखपट्‌टणम अनुसंधान केन्द्र अपने निजी भवनों में कार्यरत है। कालिकट अनुसंधान केन्द्र केन्द्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान के भवन के एक भाग में स्थित है। बुरला और होशंगाबाद केन्द्र अभी भी किराये के भवन में कार्यरत है।

कोचिन में अपने कर्मचारी सदस्यों के लिए संस्थान का अपना निवासीय परिसर है। एक आधुनिक अतिथि गृह तेरह लोगों के रहने की सुविधा के साथ निर्मित किया गया है और निवासीय परिसर में कार्यरत है।

प्रयोगशालाऐं

मौलिक एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान के लिए संस्थान आधुनिकतम प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है। जैवरसायन, सूक्ष्मजीव विज्ञान और मत्स्य यान प्रयोगशालाओं में मौलिक अनुसंधान के लिए सभी प्रकार के आधुनिक विश्लेषण उपकरण उपलब्ध हैं जबकि संसाधन, उपोत्पाद, गुणता आश्वासन और मत्स्य गिअर प्रयोगशालाएँ प्रायोगिक अनुसंधान पर ज्यादा जोर देते है। उपस्करण प्रयोगशाला मत्स्यन, मत्स्य संसाधन और संबंधित क्रियाकलापों में नये इलक्ट्रॉनिक साधनों के विकास में कार्यरत है।

संस्थान के वैज्ञानिक कार्यकलाप के साथ-साथ प्रशासनिक कार्यकलाप संतोषजनक रूप से कम्प्यूटरीकृत किये गये हैं। आधुनिक सम्प्रेषण और सूचना व्यवस्था जैसे दूरभाष, टेलेक्स, फैक्स, इंटरनेट आदि भी मुख्यालय एवं अनुसंधान केन्द्रों में उपलब्ध हैं।

सभी अनुसंधान केन्द्रों में बुनियादी प्रयोगशाला सुविधाएँ उन्हें प्राप्त अधिदेश की पूर्ति के अनुरूप दी गयी हैं।

पुस्तकालय

कोचिन स्थित मुख्यालय में संस्थान का मुख्य पुस्तकालय है जबकि अनुसंधान केन्द्रों में उनकी तत्काल आवश्यकता केलिए छोटे पुस्तकालय है। मुख्यालय के पुस्तकालय में भारतीय एवं विदेशी पत्रिकाऐं उपलब्ध है। यहाँ एस एस एफ ए (जलीय विज्ञान एवं मात्स्यकी सारांश) और एफ एस टी ए (खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी सारांश) सी डी रोमों की सुविधा भी उपलब्ध है जिससे मात्स्यकी अनुसंधान और विकास संबन्धी सूचनाएँ प्राप्त करने की उसकी क्षमता बढ़ी है।

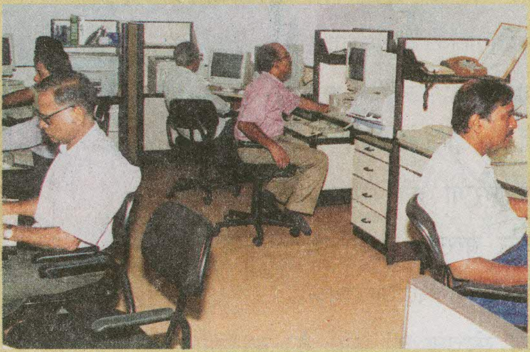

पुस्तकालय

प्रायोगिक संयंत्र

मुख्यालय कोचिन में अपने कुछ प्रौद्योगिकियों को प्रायोगिक संयंत्र के स्तर पर स्थानान्तरित करने की व्यवस्था है। इनमें मुख्य है काईटीन, काईटोसन, बैटेड और ब्रेडैड मत्स्य उत्पाद, डिब्बाबंधित उत्पाद और मत्स्य चारा तैयार करने वाले प्रायोगिक संयंत्र।

मत्स्यन जहाज़

भारत में मत्स्यन जहाज़ों के अभिकल्प में के मा प्रौ सं अग्रगामी है। इस की ख्याति में 23 से ज्यादा अभिकल्प है और संस्थान में ही इन अभिकल्पों के कई प्रोटोटाइप्स निर्मित किये गये है और अनुसंधान कार्य के लिए मुख्यालय एवं अनुसंधान केन्द्रें में उपयोगित है। इन अभिकमल्पों से 91% से ज्यादा वाणिज्य मत्स्यन फ्लीट निर्मित किये गये हैं। इन अभिकल्पों में हाल ही का वैशिष्ट्य है इंधन -क्षम इस्पात जहाज़ (15.2 मी) जिसे मत्स्यन यान निर्माणकर्ता एवं यान परिचालकों

द्वारा बहुत ही प्रशंसा प्राप्त हुई है।

अभियांत्रिकी कार्यशाला

अभियांत्रिकी कार्यशाला

कोचिन में के मा प्रौ सं का सुसज्जित अभियांत्रिकी कार्यशाला है जहाँ मत्स्यन उपांग के रूप में आवश्यक सहायक उपकरणों की संरचना और मत्स्यन जहाज़ के निर्माण के लिए आवश्यक की संरचना की जाती है। कार्यशाला में लेथ और सभी ट्रेडों के अनुभवी व सुशिक्षित तकनीशियनें है।

पशु गृह

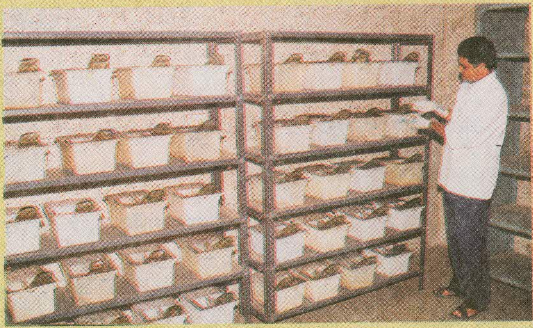
पशु गृह

महासागरीय और गहर समुद्री जल से नये प्रकार की कई मत्स्य जातियाँ पैदा होती हैं। इन नयी जातियों की पचनीयता, पोषण मूल्य, संभवित विषक्तता आदि का मूल्यांकन करना संस्थान की जिम्मेदारी है। स्वच्छ एवं संसाधित मत्स्य और मत्स्य उत्पादों में इन तथ्यों का मूल्यांकन करना संस्थान के नियमित कार्यक्रम में शामिल है। मुख्यालय में इस से संबंधित आवश्यकताओं के लिए एक पशुगृह का अनुरक्षण किया जा रहा है।

वाहन

अनुसंधान आवश्यकता, क्षेत्र कार्य आदि की सहायता के लिए वाहनों का उपयुक्त अनुरक्षण संस्थान में किया जा रहा है। प्रत्येक केन्द्र को एक जीप भी उपलब्ध कराया गया है। मुख्यालय में स्टैफ कार के साथ सात वाहन तक अनुरक्षित हैं।

एरीस सेल

संस्थान में एक एरीस सेल कार्यरत है। यह ई डी पी और सूचना पुनः प्राप्ति के लिए केन्द्रीय व्यवस्था के रूप में कार्य करता है। एक VSAT की स्थापना की गयी है और इंटरनेट एवं ई-मेल सुविधा के लिए UNIX SOLARIS सरवर समानुरूपित किया गया है।

संस्थान द्वारा विकसित मुख्य प्रौद्योगिकियाँ

सागर कृपा - 15 मी इंधन क्षम इस्पात मत्स्यन यान

* 7.6 एम - 15.2 एम रेंज आकार के बारह लकड़ी मत्स्यान जहाज़ों का अभिकल्प

* इस्पात मत्स्यन जहाज़ का अभिकल्प जैसे 15.5 मी 20 मी और 24 मी OAL

* अभितट जल के लिए एलुमिनियम यान और लक्षद्वीप के लिए FRP पोला और लेन मत्स्यन जहाज़।

* यान निर्माण के लिए कम मूल्यवान् लकड़ी के लिए द्विगुण परिरक्षक उपचार और परम्परागत मत्स्यन यानों के लिए देशीय परिरक्षकों का सूत्रीकरण

* एलुमिनियम मैग्नीशियम मिश्रण की लेपन अवधि और मत्स्यन जहाज़ों के जालाधीन भाग के लिए FRP आवरण।

* विषैली लकड़ी प्लास्टिक मिश्र (TWPC) का विकास।

* मत्स्यन यानों के परिरक्षण के लिए प्रति दुर्गन्ध और प्रतिसंक्षारण प्रलेप।

* मत्स्यन यानों के पारा मुक्त अनोड़ के लिए कैथोड़परिरक्षण।

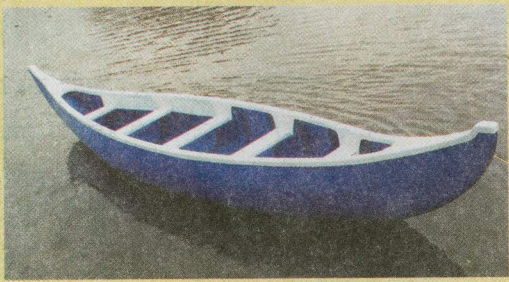

एफ.आर.पी. झेंगी

* ढलवाँ लोहा नोदक के लिए परिरक्षक लेपन।

* विभिन्न प्रकार के मत्स्यन गिअर की संरचना के लिए संश्लेषी सामग्री के विभिन्न प्रकारों के लिए विनिर्देश।

* विभिन्न प्रकार के मत्स्यन गिअरों का अभिकल्प ट्रॉल के रूप में जैसे तलमज्जी, क्लोम और उप क्लोम अनुप्रयोग, गिल जाल, कोषसंपाश, ट्रैप्स आदि जलाशय मात्स्यकी के साथ विभिन्न मत्स्यन संपदा के शोषण के लिए किया गया है।

* तलमज्जी ट्रॉल मत्स्यन परिचालन एवं परिवर्ती गहन मत्स्यन उपयुक्तता के लिए विभिन्न आकार के ओटरबोर्ड और अभिकल्प।

* गहर समुद्री मत्स्यन के लिए संयोग तार रस्सी।

* उप-पकड़ कमी युक्तियाँ - 1. 40, 50 और 60 मि मी मेश आकार के वर्ग मेश पेनल 2. मत्स्य आँख झींगा ट्रॉल में विशेषकर किशोर और युवा उप-पकड़ को कम करने के लिए तैयार किया गया है।

V - आकार ऊदक बोर्ड

* कूर्म निष्कासन युक्ति (टेड) की अभिकल्प संरचना और लोकप्रियता

* पहले भारतीय एन्टार्टिक क्रिल अभियान दौरान अन्टारटीक क्रिल के लिए ध्वनिक खोज और मध्य-जल ट्रॉलिंग से उद्देशित तकनीक को निकासित किया गया है।

* कॉटेज स्तर परिचालन के लिए सुरंग शुष्कित, धूर्णी मत्स्य भोजन शुष्कित, इलेट्रिक मत्स्य शुष्कित जैसे शुष्कित का अभिकल्प किया गया है।

कूर्म निष्कासन युक्ति

* गहन वसा फ्रायर, कटलेट संच यंत्र, इनबोर्ड/औटबोर्ड ड्रव, विद्युत-तापीय धूम भट्टा, यंत्रीकृत संसाधन टेबल, स्प्रैटस के लिए यान्त्रिक मत्स्य क्लीनर का अभिकल्प किया गया है।

* मत्स्यन जहाज़ के लिए इंधन क्षम नोदक

* अन्य इंधन बचत युक्ति जैसे नोदक तुंड

* कृषि एवं समुद्री विज्ञान के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरण

* जल हायसिन्थ से जैवगैस संयंत्र

* मत्स्यन उपांग जेसे ट्रॉल विन्च, पावर-टेक-ऑफ क्लच, गरडी आदि

* 150 कि ग्रा क्षमता की प्रशीतित समुद्री जल का संयंत्र

* प्रति दिन 1000 कि ग्रा कच्ची सामग्री हस्तन के लिए शार्क कलेजा तेल/मत्स्य तेल संयंत्र का अभिकल्प।

* मत्स्य संसाधन संयंत्रों की स्थापना में आवश्यक विशेष सहायता प्रदान किया जाता है।

* विभिन्न प्रकार के मत्स्य एवं कवच मत्स्य प्रशीतन, प्रशीत शुष्कन, डिब्बाबंदी

शुष्कन/संसाधन के लिए सुधारित पद्धतियाँ।

* उत्थित प्लैटफार्म पर ऐंचोवील्ला का स्वास्थ्यकर शुष्कन।

* मत्स्य संसाधन स्थापनाओं और यान डेक के लिए सफ़ाई अवधि और गन्धहारक और प्रतिरोधी लेप की तैयारी।

* अल्प श्रेणी मत्स्य का लाभकारी उपयोग और मत्स्य रद्दी से उपयोगी उपोत्पाद का परिवर्तन के लिए पद्धति।

* मूल्य जोड़ उत्पाद के उत्पादन के लिए पद्धतियाँ जैसे मत्स्य/कवच मत्स्य से वेपर, अचार, सूप आदि

* मत्स्य संसाधन संयंत्र में उपयोगी जल में क्लोरिन स्तर का आसन्न अध्ययन के लिए क्लोरिन स्तर सूचक कागज़।

क्लोरीटेस्ट - क्लोरिन स्तर सूचक कागज़

* विभिन्न प्रकार के समुद्री खाद्य, संसाधन जल और बर्फ खाफ संसाधन के लिए विनिर्देशन।

* एच ए सी सी पी के कार्यान्वयन के लिए कार्यविधि

* झींगा कवच रद्दी से काईटीन/काईटोसन की निष्कर्षण पद्धति और कपडा एवं मुर्गीपालन उद्योग और चिकित्सा क्षेत्र में उसका अनुप्रयोग।

काईटोसन के उत्पादन के लिए पायलट संयंत्र

* ग्लूकोसमीन हाईड्रॉक्लोरीड की तैयारी के लिए पद्धति

* शार्क फिन रे और संसाधन शार्क उपस्थि के निष्कर्षण के लिए पद्धति।

* द्विकपाटी, विशेषकर सीपी और मसल से रोगजनक जीवाणु और किर किराहट उन्मोलन के लिए एक 18h शुद्धीकरण पद्धति।

* मत्स्य त्वचा, हड्डी और वायु आशय से कोलैजन, दन्तचिकित्सा फिल्म, जलन के उपचार में अनुप्रयोग और सघनता में नियंत्रित ऊतक पुनःजनक में रोध सामग्री के रूप में।

* मत्स्य अंत्र से उच्च श्रेणी के विलीन शल्य सीवन

* जीवाण्वीय पालन मीडिया ऐल्टरोमोनस पुट्रीफेसीन्स शक्तिमान अपहारक जीवाणु की सीधी खोज और गणना और बसील्स जाति के वृन्दन निरोध द्वारा संसाधित/उपपरिरक्षित/लवणित मत्स्यन उत्पादों की कुल प्लेट गणना का आकलन।

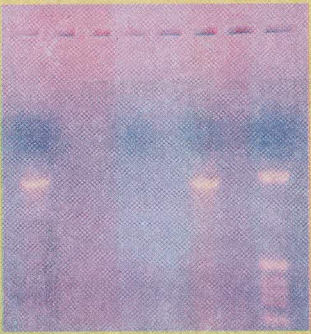

पी.सी.आर. तकनीक का प्रयोग

* कोलीफईज के उपयोग द्वारा मल प्रदूषण की खोज की पद्धति

* बहुतयी श्रृंखला प्रतिक्रिया (पी सी आर) तकनीकी के उपयोग से खेती किये झींगों में प्राप्त सफेद चित्ती बीमारी के खोज के लिए एक पद्धति को विकसित किया गया है।

* सौन्दर्य में उपयोग के लिए शार्क कलेजे से स्क्वालीन को अलग करने की पद्धति।

* मंत्स्य तेल से मिश्रित m-3 पोली असंतृप्त वसा अम्ल की तैयारी की पद्धति।

* समुद्री अपतृण से उच्च जेल शक्ति का अगर

* भारतीय मानक ब्यूरो के लिए विभिन्न मत्स्य उत्पादों के लिए मानकों का सूत्रीकरण।

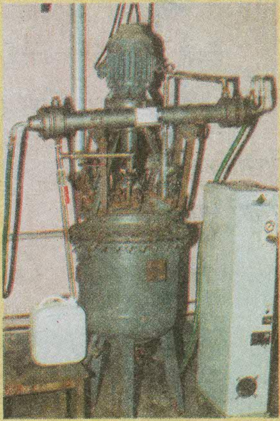

पुफा उत्पादन यूनिट

* जीवाण्वीय मूल्यांकन के लिए अवरुद्ध मत्स्य ब्लॉक से एक रूपी नमूनों की प्राप्ति के लिए युक्ति
* मत्स्य संसाधन संयंत्र के लिए बहिःस्राव उपचार
* मत्स्य के परिवहन एवं संग्रहण के लिए सुधरित संवेष्टन सामग्री
* समुद्री खाद्य गुणता में HACCP के लिए एक सोफ्टवेयर का विकास किया गया।

उद्योग के लिए सहायता

देश के मत्स्यन एवं मत्स्य संसाधन उद्योग के साथ संस्थान निकट संपर्क रखता है। उपरोक्त सूचित संस्थान द्वारा विकसित सभी प्रौद्योगिकियाँ वाणिज्यिक रूप में व्यवहार्य है। यह परामर्श आधार पर उद्योग के अनुप्रयोग को स्थानांतरण करने के लिए तैयार है।

परामर्श स्थानांतरण

इसके अलावा मत्स्यन/मत्स्य संसाधन से संबंधित औद्योगिक उत्पाद के लिए के मा प्रौ सं विश्लेषण सेवाओं से उद्योग की सेवा कर रहा है।

निम्नांकित के लिए विश्लेषण सेवाएें उपलब्ध है:

* डिब्बाबंदी मत्स्य उत्पाद
* अवरुद्ध मत्स्य उत्पाद
* शुष्कित मत्स्यन उत्पाद
* IQF उत्पाद

विश्लेषण

* काईटीन/काईटोसन
* अन्य मत्स्य उपोत्पाद
* मत्स्य विशेषित उत्पाद
* पैस्तेरीकृत उत्पाद
* संसाधन संयंत्रों में उपयोगित जल एवं बर्फ़
* मत्स्य सेरस
* AFD उत्पाद
* रसायन
* कृषि उत्पाद
* मत्स्य एवं मत्स्यन उत्पाद, संसाधन जल एवं खेती जल में प्रतिजैविक और पीड़कनाशी अवशेष
* संवेष्टन सामग्री
* स्वच्छता सर्वेक्षण
* गिअर सामग्री
* यान सामग्री
* समुद्री प्रलेपन
* समुद्री इंजन

विस्तार सेवाएँ

संस्थान की मुख्य कार्यकलाप है वास्तविक उपयोगकर्ता तक अनुसंधान के परिणामें के प्रचार द्वारा

प्रशिक्षण कार्यक्रम

उद्योग की आवश्यकताएँ प्रदान करना। के मा प्रौ सं में प्राप्त प्रौद्योगिकियों के स्थानांतरण में एकल गवाक्ष पहल द्वारा तकनीकी प्रश्नों का समाधान करना, अभिकल्पों की पूर्ति और प्रकाशन, प्रदर्शन एवं फिल्म प्रदर्शन का आयोजन, तकनीकी पेम्फलेटों, फोल्डर और पुस्तिकाओं का प्रकाशन, प्रेस विज्ञप्तियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन आदि ग्राहकों तक पहूँचाने में बहुत ही प्रभावी है।

मत्स्यन प्रौद्योगिकी में मानव संसाधन विकास

मत्स्यन और मत्स्य संसाधन उद्योग के तकनीकी कार्मिक, सरकारी संगठनों के अधिकारी, गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रायोजित कार्मिक, नये ठेकेदार और कमज़ोर वर्ग के मछुवा और मछुवा महिला जैसे विभिन्न श्रेणियों के ग्राहकों केलिए आवश्यक आधारित प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन करता है। राजभाषा हिन्दी में भी प्रशिक्षण, प्रदर्शन कार्यक्रम, संगोष्ठियों, तकनीकी भाषण आदि का आयोजन संस्थान करता है ताकि सही उपभोक्ताओं तक संस्थान के अनुसंधान परिणाम पहूँच सकें।

संस्थान अपने कर्मचारी सदस्यों के लिए प्रशिक्षण, गोष्ठी/संगोष्ठी में प्रतिभागिता और देश विदेश में अनुसंधान और विकास के मुख्य क्षेत्रों में शिक्षण कार्यक्रमों में उपस्थित होने का अवसर प्रदान करता है।

मात्स्यकी शिक्षा

केरल विश्वविद्यालय, कोचिन विश्वविद्यालय और जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा के मा प्रौ सं को स्नातकोत्तर अनुसंधान के लिए मान्यता दी गयी है। कोचिन विश्वविद्यालय के इंडस्ट्रियल फिशरीस विभाग के औद्योगिक मात्स्यकी के स्नातकोत्तर कार्यक्रम तथा केन्द्रीय समुद्री मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान के मैरीकल्चर स्नातकोत्तर के लिए संस्थान शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। संस्थान में के म शि सं, मुम्बई की मान्यता प्राप्त पश्च प्रग्रहण प्रौद्योगिकी में मात्स्यकी निष्णात पाठ्यक्रम चालू है। हाल ही में पश्च-पैदावर प्रौद्योगिकी में डॉक्टोरल कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है।

अनुबंध

संस्थान केन्द्र एवं राज्य सरकारों के विभागों भा कृ अनु प के अन्य संस्थानों,

विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों, मत्स्यन सेक्टर के विकास में कार्यरत मछुवा निकायों और अंतरराष्ट्रीय उत्कृष्ट संगठनों जो कि मत्स्यन से संबंधित अन्वेषणों में कार्यरत है।

भारतीय मानक ब्यूरो के गुणता-मानकों के सूत्रीकरण और उनको समय समय पर संस्थान सहायता कर रहा है। उसी तरह, संस्थान अंतर विभागीय पैनल (IDP) और पर्यवेक्षी अंकेक्षण दल में मुख्य भूमिका निभा रहा है जिस की स्थापना EU देशों को मत्स्य संसाधन संयंत्र से निर्यात किये जाने वाले उत्पाद के अनुमोदन के उद्देश्य के लिए भारत सरकार द्वारा घठित किया गया है।

सामाजिक और पर्यावरण पहलूओं से संबंधित समस्यों के समाधान के लिए के मा प्रौ सं के वैज्ञानिकों ने अहम भूमिका निभाया है। उन में से कुछ है:

* गोश्री द्वीप विकास प्राधीकारण, कोचिन के लिए ज़मीन का निकर्षण, उद्धार और जल पर पुलों का निर्माण और वेम्बनाड़ झील, उसके वनस्पति जात की विशेष के प्रभाव पर अध्ययन।

* केरल सरकार की पर्यावरण पर विधायक समिति के अपस औद्योगिक प्रदूषण के कारण पेरीयार में सामूहिक मत्स्य मृत्यु पर रिपोर्ट प्रस्तुत।

* नये EU विनियम के अनुसार संसाधन व्यवस्था, कच्ची सामग्री की गुणता और स्वास्थ्यकर के संबंध में भारत में समुद्रीखाद्य संसाधन संयंत्रों में कई संशोधनों को अपनाना है। इन संशोधनों को लागू करने के लिए के मा प्रौ सं में आवश्यक सभी उपयुक्त व्यवस्थाएँ और सुविज्ञताएँ होने के कारण, भारत सरकार ने संसाधन संयंत्र निरीक्षण, जल, बर्फ़ और कच्ची सामग्री प्रमाणीकरण और अंतर-प्रयोगशाला अंशशोधन का कार्य संस्थान को सौंपा है।

संस्थान के वैज्ञानिकों को विश्वविद्यालय गैर-सरकारी संगठन, राज्य और केन्द्र सरकारी संगठन, शैक्षिक संस्थान आदि द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, संगोष्ठी, कार्यशाला और गोष्ठीयों में भाषण देने के लिए अकसर बुलाया जाता है।

के मा प्रौ सं के लिए जयपत्र

संस्थान को वर्ष 2000 का सरदार पटेल उत्कृष्ट भा.कृ.अनु.प. संस्थान पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार संस्थान द्वारा मत्स्य पैदावार और पश्च पैदावार प्रौद्योगिकी में दिये योगदान की मान्यता में दिया गया है ।

'ग' क्षेत्र के संस्थानों में उत्तम राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2001-2002 का राजर्षि टंडन पुरस्कार केन्द्रीय मात्स्यकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचिन को प्राप्त हुआ है।

निदेशक, के.मा.प्रौ.सं. कोचिन - 29 द्वारा मुद्रित